**Indian Streams Research Journal**
**Vol -1 , ISSUE –1, Feb - 2011**
**ISSN:-** 2230-7850
Available online at www.isrj.org

ORIGINAL ARTICLE

# समाज परिवर्तनवादी कबीर

**सुब्राव नामदेव जाधव**

हिंदी विभाग , श्री. शिवाजी महाविद्यालय, बार्शी .

***सारांश*** :

संत कबीर को एक समाज सुधारक के रुप में देखा जाता है। कबीर ने तत्कालीन समाज में उत्पन्न जाति-पॉति, उंच-नीच का भाव, विषमताओं, अंधविश्वास आदि को मिटाने का प्रयास किया। साथ ही साथ समाज में समन्वय लाने के लिए अलग-अलग पदों के माध्यम से लोगो को समझाने का प्रयास किया।

***प्रस्तावना*** :

कबीर ने समाज में व्याप्त दुख, अज्ञान, भेदभाव को अपने ऑखो से देखा था। उन्होंने हिन्दु, मुसलमान, बौध्द, जैन, अवधूत आदि में जो भी दोष देखा उन पर उन्होंने प्रहार किया हैं। समाज में, जाति-जाति में, धर्म-धर्म में वैमनस्य की भावना पैदा करने वाले पंडितों पुजारियों, मुल्लाओं तथा काजियों को उन्होंने फटकार लगाई हैं

कबीरदास ने हिन्दु और मुसलमान को 'राम' का भजन करने की सलाह दी है। कबीर लिखा है।"कहे कबीर एक राम भजहू रे, हिदु तुरक ने"

हमारे रॉम रहीम करीमाँ केसी, अलह रॉय सति सोई।

कबीर के राम- रहीम की एकता के संदभ मे आचार्य शुक्ल ने लिखा है। पासना के बाह्य स्वरुप आग्रह करनेवाले और कर्मकांड को प्रधनता देने वाले पंडितों और मुल्लों दोनों को उन्होंने खरी- खरी सुनाई और राम रहीम की एकता समझकर हदय को शुध्द ओर प्रेममय करने का उपदेश दिया। देशाचार ओर उपासना विधि के कारण मनुष्य में जो भेदभाव उत्पन्न हो जाता है उसे दूर करने का प्रयास उनकी वाणी बराबर करती रही।"

कबीर एक सच्चे समाज सुधारक होने के कारण कबीर ने धार्मिक, सामाजिक दोषों को हटाने का कार्य किया। इस संदर्भ में रामकुमार वर्मा लिखते है। "कबीर के पहिले भी हिदु समाज में कितने ही धार्मिक सुधारक हुए थे,पर उनमें अप्रिय सत्य कहने का बल अथवा साहस नहीं था। हिंदु जन्म से ही अधिक धर्मभीरु होता है। यह जातीय दुर्बलता है। दूसरों की धार्मिक नीति का स्पष्ट विरोध करना मुस्लिम धर्म का एक विशेष अंग है। इन्ही दोनों परस्पर प्रतिकुल समनताओं के योग से कबीर का उदय हुआ था। जिनका प्रधान उद्देश इन दो सरिताओं को एक मुख करना था। कबीर की शिक्षा में हमें हिन्दुओं और मुसलमानों के बीच की सीमा तोडने का यत्न दृष्टिगत होता है। यही उनकी आन्तरिक अभिलाषा थी।"

संत कबीर पुर्तिपूजा के घोर विरोधी थे। उनका मानना है कि, जिनका जिस परमात्मा का कोई आकार नहीं है। कोई उसे आधार नाहीं है। उसकी मुर्ति कैसी? कबीर ने मुर्तिपुजा के संदर्भ में लिखा है।

" हम भी पाहन पुजते, होते बन के रोझ
सद्गुरु की किरिपा भई, डारथा सिर में बोझ
सेवें सालिगराम कूं मन की भ्रान्ति न जाई।
सीतलता सुपि नें नहीं, दिन दिन अथकी लाई।

संत कबीर ने मूर्तिपूजा में भगवान की मूर्ति को जो भोग लगाने की प्रथा है, उसकी वे इस प्रकार हंसी उडाते हैं।

"लाडू लावर लापसी पूजा चढे अपार,
मूर्ति पूजा पूजारी ले यला मूरार्त के मुख छार"

धर्म में देखााई देने वाला अंधविश्वास अंधविश्वास के पिछे दौडते समाज के अज्ञानी लोग में जागृती लाने का काम कबीर ने किया है।

धार्मिक क्षेत्र के आलावा समाज की स्थिती भी ऐसी थी। यह बडे आश्चर्य की बात है कि आज के युग में जिस साम्यवाद की पुकार सुनाई पडती है। कबीर इतने वर्ष पहले साम्यवादी विचार रखकर इनका मार्ग दर्शन कर गए। उॅच-नीच, अमीर-गरीब, ब्राह्मण -शुद्र आदि प्रचलित भेद-भाव को वे सहन नहीं कर सकते थे। कबीर ने इस प्रकार के विचारवाले मनुष्यों की अच्छी जबर ली है।

कबीर वर्ग-भेद जाति -पाति आदि के विरोधी थे। कबीर का मानना है कि ब्राह्मण और शुद्र में एक ही सा खून है और सभी एक ही भगवान की संतान है। उनमें छोटा-बडा कोई भेद भाव नहीं। अच्छे काम करने वाला श्रेष्ठ हो जाता है। चाहे व किसी जाति या धर्म से हो।

रामकुमार वर्मा ने एक सच्चे समाज सुधारक कबीर के संदर्भ में लिखा है। " सच्चा सुधारक समाज में नये मार्ग का प्रदर्शन करने की अपेक्षा अंधविश्वास में पडे हुए मनुष्यों को तर्क द्वारा जागृत करना अधिक आवश्यक समझते हैं। कबीर स्वाधीन विचार के व्यक्ति थे। काशी में हिंदु धर्म के प्रधान केंन्द्र में कबीर के सिवा और कौन साहास कर पूछ सकता था कि" जो तुम ब्राह्मण जाये, और राह तुम कोह न आये"

संत कबीर एक अच्छा तथा वर्गविहीन समाज का निर्माण करना चाहते थे। उनका मानना था कि समाज में उंच-नीच का भेद मिथ्या है क्यो कि सम्पूर्ण जगत की उत्पत्ति पवन, जल, मिट्टी आदि पंचभुतों से हुई है।

कबीर ने देखा था कि छुआछुत की बुराई सारे समाज को पनन के गर्त में धकेल रही थी। इसलिए इन्होंने इसका विरोध किया। कबीर ने आडाम्बर, ढोंग, ढल आदि को देखकर उसपर प्रहार किया।

संत कबीर ने समाज की आर्थिक व्यवस्था तथा सामन्ती शोषण का भी चित्रण किया है। कबीर की धारणा थी कि समाज में रहने वाले लोगों में प्रेम भाव रहे। कबीर का विचार था कि करुणा, दया, प्रेम, परमार्थ, विनय आदि नैतिक मूल्यों के द्वारा ही एक श्रेष्ठ समाज की परिकल्पना की जा सकती है।

समाज सुधारक कबीर के महत्त्व क स्वीकार ते हुए मैनेजर पांडेथ ने लिखा है। "कबीर केवल अपने युग की चिंता के कवि नही है, वे भारत के अतीत की तेजस्वी ज्ञान धारा और भविष्य की सम्भावनाओं के भी कवि है। यही कारण है कि आधुनिक भारतीय साहित्य और संस्कृति की अग्रगामी पटम्मरा में कबीर तत्व अनेक रुपों में विद्यमान है। वह एक और कबीर- संगीत की उस परस्परा में है। जिससे साधारण जनता हजार कढिनाइयों के बीच जीने की शक्ति पानी है तो इतरी और वह साहित्य में अपने समय की विसंगतियों को पहचानने और साधारण जनता के दुख-दुर्द ते हमदर्दी अनुभव करने की दृष्टि देता है।

संक्षेप मे हम क सकत है कि कबीर सही अर्थो में समाज जागरण समाजसुधार परितर्वतनवादी श्रेष्ठ निर्मुण मार्गी संत कवि भी थे। कबीर की वाणी के कारण समाज में बहुत परिर्वतन आया है।आज भी कबीर चर्चा में रहे है।

**संदर्भ :-**

१) कबीर विमर्श- डॉ. इशरत खान
२) हिन्दी साहित्य का इतिहास -आ. रामचंद्र शुक्ल
३) हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास - रामकुमार वर्मा